ISSN : 2583-2948

(1)"मै समझी नहीं"

वंदना सिंह - शोधार्थी,
गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड
मो॰ 7060584402

तुम आते थे जाते थे।

बार बार आते थे, हर बार

एक ही बात बताते थे।

कुछ छूट गया,

मैं भूल गया

वही लेने आया हूँ।

ये सिलसिला जारी रहा

वर्षों वर्षों चलता रहा।

तुम फिर आये

ये बताने कि

अब इस सिलसिला

का अंत है,

तुम मेरे साथ चलोगी?

(2)"अलौकिक सुख"

चाँद ढलता है

सूरज निकलता है।

सूरज ढलता है

चाँद निकलता है।

फिर चाँद ढलता है

और सूरज निकलता है।

यह प्रक्रम रोज़ रोज़ चलता है।

कभी सूरज तले, कभी चाँद तले,

ISSN : 2583-2948

हर प्रेमिका अपने प्रेमी पर दृष्टि लगाये

सावन बन बरसती है।

हर प्रेमी आँखों को बंद करके

अपनी प्रेमिका को ढूँढता है।

यह अलौकिक प्रेम

अग्नि के फेरे बिना ही

ख़ूब फलता फूलता है।